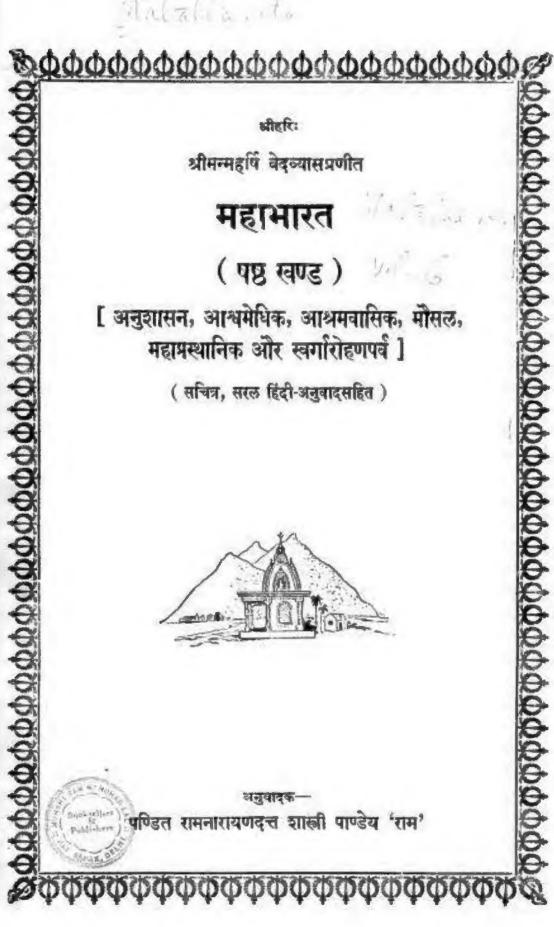
Alaba anto



अनुशासनपर्व

stedid	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय विषय पृ	.संस्या
-	(दान-धर्म-पर्व)		१७ शिवसङ्खनामस्तोत्र और उसके पाठका फल	५५१३
१-युधि	रको सान्त्वना देनेके छिपे भीष्म	जीके	१८-शिवसहस्रनामके पाठकी महिमा तथा	
	गौतमी ब्राह्मणी, व्याष्ट्रं सर्पः मृत्युः		ऋषियोंका भगवान् शङ्करकी कृपासे अभीष्ट	
ক্ষাক্ত	संबादका वर्णन	*** 4854	सिद्धि होनेके विपयमें अपना-अपना अनुभव	
२-प्रजाप	ति मनुके वंशका वर्णनः अग्नि	पुत्र	सुनाना और श्रीकृष्णके द्वारा भगवान् शिवजी-	
	नका अतिथि-सत्काररूपी धर्मके पार		की महिमाका वर्णन	9429
	र विजय पाना ***		१९-अष्टावक मुनिका बदान्य अरुपिके कहनेसे	
	मित्रको ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति कैसे हुई		उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान, मार्गमें कुवेरके	
इस वि	वेषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न	*** 48\$6	द्वारा उनका स्वागत तथा स्त्रीरूपभारिणी	
	गिढके वंशका वर्णन तथा विस्वामि		उत्तर दिशाके साथ उनका संवाद	५५३४
जन्मव	भी कथा और उनके पुत्रोंके नाम	4838	२०—अष्टावक और उत्तर दिशाका संवाद	4480
५-स्वामि	भक्त एवं दयाछ पुरुषकी श्रेष्ठता बता	निके	२१-अष्टावक और उत्तर दिशाका संवादः अष्टावक-	
लिये ह	(न्द्र और वोतेके संवादका उल्लेख	dars	का अपने घर छीटकर वदान्य ऋषिकी कन्याके	
६—दैवर्क	अपेक्षा पुरुषार्थकी श्रेष्ठताका वर्णन	4884	साय विवाह करना	५५४२
७-कर्मी	ते फलका वर्णन बाह्मणोंकी महिमा	*** 4886	२२-युधिष्ठिरके विविध धर्मयुक्त प्रश्नोंका उत्तर तथा	
			आद और दानके उत्तम पात्रींका लक्षण	4488
	गको देनेकी प्रतिशा करके न देने		२३-देवता और पितरींके कार्यमें निमन्त्रण देने	
	धनका अपहरण करनेसे दोवकी मा		योग्य पात्री तथा नरकगामी और स्वर्गगामी	
	में सियार और वानरके संवादका उरु		मनुष्योंके लक्षणींका वर्णन ***	
	गहाणींको दान देनेकी महिमा		२४-ब्रह्महत्याके समान धापींका निरूपण	
	कारीको उपदेश देनेसे हानिके विष			५५५९
	ग्रुद्र और तपस्वी ब्राह्मणकी कथा			५५६३
	के निवास करने और न करने य		२७-ब्राह्मणत्वके लिये तपस्या करनेवाले मतङ्गकी	
-	स्त्री और खानोंका वर्णन		इन्द्रसे बातचीत	५५७१
	की गति और प्रायश्चित्तका वर्णन		२८-ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेका आग्रह छोड़कर दूसरा	
_	रुपके संयोगमें खीको ही अधिक	-	वर माँगनेके लिये इन्द्रका मतङ्कको समझाना	
	सम्बन्धमें भंगास्वनका उपाख्यान		२९-मतङ्गकी तपस्या और इन्द्रका उसे क्रदान देना	4404
१३-शरीर	वाणी और मनसे होनेवाले पा	पीके	३०-बीतहव्यके पुत्रींते काशी-नरेशोंका धीर युद्धः	
पारत्य • ४भीव्यः	ागका उपदेश जीकी आज्ञासे भगवान् श्रीकृष्ट	ाका स्टब्स	प्रतर्दनद्वारा उनका वध और राजा वीतह्व्यको	
	रसे महादेवजीके माहातम्यकी कः		भृगुके कथनसे ब्राह्मणत्व प्राप्त होनेको कथा ***	५५७७
	युद्धारा महादेवजीकी स्तुति-प्रार्थ		३१-नारदजीके द्वारा पूजनीय पुरुषोंके छक्षण तथा	
	दर्शन और बरदान पानेका तथा अ		उनके आदर-सत्कार और पूजनसे प्राप्त होने-	
	र्शन प्राप्त होनेका कथन			4468
	और पार्वतीका श्रीकृष्णको वरदान		३२-राजर्षि वृषदर्भ (या उशीनर) के द्वारा शरणा-	
	युके द्वारा महादेवजीकी महिमा		गत कपोतकी रक्षा तथा उस पुण्यके प्रभावसे	
	यु-श्रीकृष्ण-संवादमहात्मा तण्डित		_	4468
	यी महादेवजीकी स्तुतिः प्रार्थना			4460
उसक		4406	*	4468

३५-ब्रह्माजीके द्वारा ब्राह्मणोंकी महत्ताका वर्णन ** ५५९१	५६ च्यवन ऋषिका भुगुवंशी और कुशिकवंशियोंके
३६-ब्राह्मणकी प्रशंसाके विषयमें इन्द्र और शम्बरा-	सम्बन्धका कारण बताकर तीर्थयात्राके लिये
सुरका संवाद ***	प्रस्थान *** ५६४९
३७-दान-पात्रकी परीक्षा	५७-विविध प्रकारके तप और दानोंका फल ** ५६५१
३८-पञ्च चूड्। अप्सराका नारदजीसे क्रियोंके दोषों-	५८-जलाशय बनानेका तथा बगीचे लगानेका फल ५६५४
का वर्णन करना	५९-भीष्मद्वारा उत्तम दान तथा उत्तम ब्राह्मणेंकी
३९-स्त्रियोंकी रक्षाके विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न *** ५५९९	प्रशंसा करते हुए उनके सत्कारका उपदेश ५६५६
४०-भगुवंशी विपुलके द्वारा योगवलसे गुरुपतीके	६०-श्रेष्ठः अयाचकः धर्मात्माः निर्धन एवं गुणवान्-
दारीरमें प्रवेश करके उसकी रक्षा करना " ५६०१	को दान देनेका विशेष परु
४१-विपुलका देवराज इन्द्रसे गुरूपत्नीको बचाना	६१-राजाके लिये यक्त, दान और ब्राह्मण आदि
और गुक्से वरदान प्राप्त करना ** ५६०५	प्रजाकी रक्षाका उपदेश*** *** ५६६१
४२-विपुलका गुरुकी आज्ञाने दिव्य पुष्प लाकर	६२-सब दानोंसे बढ़कर भूमिदानका महत्व तथा
उन्हें देना और अपने द्वारा किये गये दुष्कर्म-	उसीके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका संवाद ५६६३
का स्मरण करना " ' ५६०८	६३-अन्नदानका विशेष माहातम्य 🕶 ५६७०
४३-देवशर्माका विपुरुको निर्दोष वताकर समझाना	६४-विभिन्न नक्षत्रोंके योगमें भिन्न-भिन्न वस्तुओंके
और भीष्मका युधिष्ठिरको स्त्रियोंकी रक्षाके लिये	दानका माहातम्य *** ५६७३
आदेश देना *** *** ५६१०	६५-सुवर्ण और जल आदि विभिन्न वस्तुओंके
४४-कन्या-विवाहके सम्बन्धमें पात्रविषयक विभिन्न	दानकी महिमा
विचार *** ५६१२	६६-जूता, शकट, तिल, भूमि, गौ और अन्नके
४५-कन्याके विवाहका तथा कन्या और दौहित्र	दानका माहात्म्य ••• • • ५६७७
आदिके उत्तराधिकारका विचार *** ५६१७	६७-अन्न और जलके दानकी महिमा
४६-छियोंके वस्त्राभृषणींसे सत्कार करनेकी आवश्य-	६८-तिल, जल, दीप तथा रत आदिके दानका
कताका प्रतिपादन *** ५६१९	माहात्म्य-धर्मराज और ब्राह्मणका संवाद ** ५६८२
४७-ब्राह्मण आदि वर्णोकी दायभाग-विधिका वर्णन ५६२०	६९-गोदानकी महिमा तथा गौओं और ब्राह्मणींकी
४८-वर्णसंकर संतानींकी उत्पत्तिका विस्तारसे वर्णन ५६२५	रक्षासे पुण्यकी प्राप्ति *** ५६८५
४९-नाना प्रकारके पुत्रींका वर्णन ५६२९	७०-ब्राह्मणके धनका अपहरण करनेसे होनेवाळी
५०-गौओंकी महिमाके प्रसङ्गमें च्यवन मुनिके उपा-	इानिके विषयमें द्रष्टान्तके रूपमें राजा खगका
ख्यानका आरम्भः मुनिका मत्स्योंके साथ जालमें	उपाल्यान ••• ५६८७
फॅसकर जलसे बाहर आना *** ५६३१	७१-पिताके शापसे नाचिकेतका यमराजके पास जाना
५१-राजा नहुषका एक गौके मोलपर च्यवन मुनिको	और यमराजका नाचिकेतको गोदानकी महिमा
खरीदनाः मुनिके द्वारा गौओंका माहात्म्य-कथन	वताना ५६८९
तथा मत्स्यों और मलाहोंकी सद्रति *** ५६३३	७२-गौओंके लोक और गोदानविषयक युधिष्ठिर
५२-राजा कुशिक और उनकी रानीके द्वारा महर्षि	और इन्द्रके प्रश्न *** ५६९५
च्यवनकी सेवा ''' ५६३७	७३-बहाजीका इन्द्रसे गोलोक और गोदानकी
५३-च्यवन मुनिके द्वारा राजा-रानीके धैर्यकी परीक्षा	महिमा बताना **
और उनकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें	७४-वृसरोंकी गायको चुराकर देने या वेचनेसे दोषः
आशीर्वाद देना " ५६३९	गोहत्याके भयंकर परिणाम तथा गोदान एवं
५४-महर्षि च्यवनके प्रभावसे राजा कुश्चिक और	
उनकी रानीको अनेक आश्चर्यमय इश्योंका	सुवर्ण-दक्षिणाका माहातम्य
दर्शन एवं व्यवन मुनिका प्रसन्न होकर राजाको	७५-वतः नियमः दमः सत्यः ब्रह्मचर्यः माता-पिताः
वर माँगनेके लिये कहना *** ५६४४	गुढ आदिकी सेवाकी महत्ता " ५७०१
५५-च्यवनका कुशिकके पूछतेपर उनके घरमें अपने	७६-गोदानकी विधिः गौओंसे प्रार्थनाः गौओंके
निवासका कारण बताना और उन्हें वरदान देना ५६४७	निष्कय और गोदान करनेवाले नरेशोंके नाम ५७०४

७७-कपिला गौओंकी उत्पत्ति और महिमाका वर्णन ७८-विसिष्ठका सौदासको गोदानकी विभि एवं महिमा बताना	५७०७ ५७१०	९२-पितर और देवताओंका श्राद्धानसे अजीर्ण हो- कर ब्रह्माजीके पास जाना और अग्निके द्वारा अजीर्णका निवारणः श्राद्धसे तुस हुए पितरी-
भाइमा बताना ७९-गौओंको तपस्याद्वारा अभीष्ट वरकी प्राप्ति तथा उनके दानकी महिमा, विभिन्न प्रकारके गौओं-	1010	का आशीर्वाद "" ५७५३ ९३—गृहस्यके धर्मीका रहस्यः प्रतिग्रहके दोप बतानेके
के दानसे विभिन्न उत्तम छोकोंमें गमनका कथन ८०-गौओं तथा गोदानकी महिमा ८१-गौओंका माहारम्य तथा व्यासजीके द्वारा		लिये श्वादिमें और सप्तर्पियोंकी कथा, भिक्षु- रूपधारी इन्द्रके द्वारा कृत्याका वध करके सप्तर्पियोंकी रक्षा तथा कमलोंकी चोरीके विपयमें
शुकदेवते गौओंकी, गोलोककी और गोदानकी महत्ताका वर्णन "" ८२-लक्ष्मी और गौओंका संवाद तथा लक्ष्मीकी प्रार्थनापर गौओंके द्वारा गोवर और गोमूत्रमें	५७१५	शपध खानेके बहानेसे धर्मपालनका संकेत ''' ५७५४ ९४-ब्रह्मसर तीर्थमें अगस्य जीके कमलींकी चोरी होनेपर ब्रह्मपियों और राजपियोंकी धर्मोपदेशपूर्ण शपध तथा धर्मजानके उद्देशके चुराये हुए
छश्मीको निवासके छिये स्थान दिया जाना *** ८३-ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गौओंका उत्कर्ष बताना और गौओंको वरदान देना ***		कमलोंका वापस देना ''' ५७६६ ९५-छत्र और उपानह्की उत्पत्तिएवं दानविषयक '' मुधिष्ठिरका प्रकत तथा सूर्यकी प्रचण्ड धूपसे
८४-भीष्मजीका अपने पिता शान्तनुके हाथमें पिण्ड न देकर कुशपर देनाः सुवर्णकी उत्पत्ति	, ,	रेणुकाका मस्तक और पैरोंके संतप्त होनेपर जमदग्निका सूर्यपर कुपित होना और विध-
और उसके दानकी महिमाके सम्बन्धमें वसिष्ठ और परशुरामका संवाद, पार्वतीका देवताओंको शाप,तारकासुरसेडरे हुए देवताओंकाब्रह्माजीकी		रूपधारी सूर्यसे बार्तालाप ''' ५७७१ ९६ - छत्र और उपानह्की उत्मित एवं दानकी प्रशंसा ५७७३ ९७ - गृहस्थधर्म, पञ्चयज्ञ-कर्मके विषयमें पृथ्वीदेवी
	५७२४	और भगवान् श्रीकृष्यका संवाद " ५७८६ ९८-तपस्वी सुवर्ण और मनुका संवाद—पुष्प,
खोज, अग्निके द्वारा स्थापित किये हुए शिवके तेजसे संतप्त हो गङ्गाका उसे मेस्पर्वतपर छोड़ना, कार्तिकेय और सुवर्णकी उत्पत्ति, वरणरूपधारी		धूपः दीप और उपहारके दानका माहातम्य ५७८८ ९९-महुपका ऋषियोंपर अत्याचार तथा उसके प्रतीकारके लिये महर्षि भृगु और अगस्त्यकी बातचीत *** ५७९२
महादेवजीके यक्तमें अग्निसे ही प्रजापतियों और सुवर्णका प्राहुर्भाव,कार्तिकेयद्वारा तारकासुरका व	ाध५७ २ ९	१००-नहुषका पतनः शतकतुका इन्द्रपदपर पुनः अभिषेक तथा दीपदानकी महिमाः " ५७९५
८६—कार्तिकेयकी उत्पत्तिः पालन-पोपण और उनका देवसेनापति-पद्दपर अभिषेकः उनके द्वारा तारकासुरका वध	५७४०	१०१-ब्राह्मणोंके धनका अपहरण करनेसे प्राप्त होने- बाले दोपके विषयमें क्षत्रिय और चाण्डालका संबाद तथा ब्रह्मस्वकी रक्षामें प्राणोत्सर्ग
८८-आदमें पितरींके तृप्तिविषयका वर्णन	५७४२ ५७४४	करनेसे चाण्डालको मोक्षकी प्राप्ति ''' ५७९७ १०२-भिन्न-भिन्न कर्मोके अनुसार भिन्न-भिन्न छोर्को- की प्राप्ति बतानेके लिये धृतराष्ट्ररूपधारी इन्द्र
८९-विभिन्न नक्षत्रोंमें श्राद्ध करनेका फल ९०-श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी परीक्षा, पंक्तिदूषक और पंक्तिपावन ब्राह्मणोंका वर्णन, श्राद्धमें लाख मूर्खें ब्राह्मणोंको भोजन करानेकी अपेक्षा एक वेदवेत्ता-		और गौतम ब्राह्मणके संवादका उल्लेख ''' ५८०० १०३ब्रह्माजी और भगीरथका संवाद, यहा तप, दान आदिसे भी अनरान बतकी विशेष महिमा ५८०६
	५७४६	१०४—आयुकी वृद्धि और क्षय करनेवाले शुभाशुभ कमोंके वर्णनसे यहस्थाश्रमके कर्तव्योंका विस्तारपूर्वक निरूपण *** *** ५८१० १०५—बड़े और छोटे भाईके पारस्परिक वर्ताव तथा
उपदेश, विश्वेदेवोंके नाम एवं श्राद्धमें त्याज्य वस्तुओंका वर्णन		माता-पिता, आचार्य आदि गुरुजनोंके गौरव- का वर्णन *** ५८२३

१०६-मासः पक्ष एवं तिथिसम्बन्धी विभिन्न वती-	१२४-नारदका पुण्डरीकको भगवान् नारायणकी
पवासके फलका वर्णन *** ५८२५	आराधनाका उपदेश तथा उन्हें भगवद्धामकी
१०७-दिर्द्रोके लिये यज्ञतुल्य फल देनेवाले उपवास-	प्राप्तिः सामगुणकी प्रशंसा, ब्राह्मणका राक्षसके
वत और उसके फलका विस्तारपूर्वक वर्णन ५८२९	सफेद और दुर्बल होनेका कारण बताना "" ५८७४
१०८-मानस तथा पार्थिय तीर्थकी महत्ता *** ५८३८	१२५-आदके विषयमें देवदृत और पितरींका,
१०९-प्रत्येक मासकी द्वादशी तिथिको उपवास	पापींसे झूटनेके विषयमें महिषे विद्युत्मभ और
और भगवान् विष्णुकी पूजा करनेका	इन्द्रका, धर्मके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका
विदोष माहातम्य ***	तथा वृषोत्सर्ग आदिके विषयमें देवताओं।
११०-रूप-सौन्दर्य और लोकप्रियताकी प्राप्तिके	ऋषियों और पितरीका संवाद
लिये मार्गशीर्षमासमें चन्द्र-त्रत करनेका	१२६-विष्णुः बलदेवः देवगणः धर्मः अग्नि,
प्रतिपादन *** ५८४१	विश्वामित्रः गोसमुदाय और ब्रह्माजीके द्वारा
१११-बृहस्पतिका युधिष्ठिरसे प्राणियोंके जन्मके	धर्मके गृढ रहस्यका वर्णन " ५८८६
प्रकारका और नानाविध पापोंके फलस्वरूप	१२७-अमि, लक्ष्मी, अङ्गिरा, गार्थ, धीम्य तथा
नरकादिकी प्राप्ति एवं तिर्यग्योनियोंमें जन्म	जमदमिके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन *** ५८८९
होनेका वर्णन	१२८-वायुके द्वारा धर्माधर्मके रहस्यका वर्णन *** ५८९१
११२-गपसे छटनेके उपाय तथा अन्न-दानकी	१२९-लोमश्रदारा धर्मके रहस्यका वर्णन *** ५८९१
विशेष महिमा *** ५८५०	१३०-अरुन्धतीः धर्मराज और चित्रगुप्तद्वारा
११३-वृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको अहिंसा एवं धर्मकी	धर्मसम्बन्धी रहस्यका वर्णन " ५८९३
महिमा बताकर स्वर्गलोकको प्रस्थान ५८५२	१३१-प्रमथगणीके द्वारा धर्माधर्मसम्बन्धी रहस्यका
११४-हिंसा और मांसभक्षणकी घोर निन्दा *** ५८५३	कथन
११५-मदा और मांसके भक्षणमें महान् दीयः	१३२-दिगार्जीका धर्मसम्बन्धी रहस्य एवं प्रभाव " ५८९६
उनके त्यागकी महिमा एवं त्यागमें परम	१३३-महादेवजीका धर्मसम्बन्धी रहस्य " ५८९७
लाभका प्रतिपादन " ५८५५	११०-रकन्युवयमा वनसन्त्राचा रहत्त्र संब
११६—मांस न खानेसे लाभ और अहिंसाधर्मकी	भगवान् विष्णु और भीष्मजीके द्वारा
प्रशंसा "' ५८६०	माहात्म्यका वर्णन *** ५८९८
११७-शुभ कर्मसे एक कीड़ेको पूर्व-जन्मकी स्मृति होना	१३५-जिनका अन्न ग्रहण करनेयोग्य है और
और कीट-योनिमें भी मृत्युका भय एवं	जिनका प्रहण करने योग्य नहीं है। उन मनुष्योका वर्णन
मुखकी अनुभूति बताकर कीड़ेका अपने	१३६-दान छेने और अनचित भोजन करनेका
कस्याणका उपाय पूछना *** ५८६२	१३६-दान होने और अनुचित भोजन करनेका प्रायक्षित
११८-कीड़ेका क्रमशः क्षत्रिययोनिमें जन्म लेकर	१३७-दानसे स्वर्गलोकमें जानेवाले राजाओंका वर्णन ५९०३
व्यासजीका दर्शन करना और व्यासजीका	१३८-पाँच प्रकारके दानोंका वर्णन *** ५९०५
उसे ब्राह्मण होने तथा स्वर्गसुल और अक्षय	१३९-तपस्वी श्रीकृष्णके पास ऋषियोंका आनाः उनका
सुखकी प्राप्ति होनेका वरदान देना 💛 ५८६४	प्रभाव देखना और उनसे वार्तालाप करना ५९०६
११९-कीडेका ब्राह्मणयोनिमें जन्म लेकरः ब्रह्मलोकमें	१४०-नारदजीके द्वारा हिमालय पर्वतपर भूतगर्णीके
जाकर सनातन ब्रह्मको प्राप्त करना *** ५८६६	सहित शिवजीकी शोभाका विस्तृत वर्णन,
१२०-व्यास और मैत्रेयका संवाद-दानकी प्रशंसा	पार्वतीका आगमन, शिवजीकी दोनों आँखोंको 🔧
और कर्मका रहस्य *** ५८६७	अपने इार्थोंसे बंद करना और तीसरे नेत्रका
१२१-ज्यास-मैत्रेय-संवाद-विद्वान् एवं सदाचारी	प्रकट होनाः हिमालयका भस्म दोना और
ब्राह्मणको अन्नदानकी प्रशंसा *** ५८६९	पुनः प्राकृत अवस्थामें हो जाना तथा शिव-
१२२-व्यास मैत्रेय-संवाद तपकी प्रशंसा तथा	पार्वतीके धर्मविषयक संवादकी उत्थापना " ५९१०
गृहस्यके उत्तम कर्तव्यका निर्देश *** ५८७१	१४१-शिव-पार्वतीका धर्मविषयक संवाद - वर्णाश्रम-
१२३-शाव्डिली और सुमनाका खंबादपतित्रता	धर्मसम्बन्धी आचार एवं प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप
स्त्रियोंके कर्तव्यका वर्णन " ५८७३	धर्मका निरूपण *** ५९१४

१४२-उमा-महेश्वर-संवादः वानप्रस्थ धर्म तथा उसके	१२. श्राद्ध-विधान आदिका वर्णनः दानकी
पालनकी विधि और महिमा " ५९२८	त्रिविधतासे उसके फलकी भी त्रिविधता-
१४३-ब्राह्मणादि वर्षोकी प्राप्तिमें मनुष्यके ग्रुभाग्रुभ	का उल्लेख, दानके पाँच फल, नाना
कर्मीकी प्रधानताका प्रतिपादन " ५९३५	प्रकारके धर्म और उनके फलोंका प्रतिपादन ६००१
१४४-वन्धन-मुक्तिः स्वर्गः नरक एवं दीर्घायु और	१२ प्राणियोंकी ग्रुभ और अग्रुभ गतिका
अल्पायु प्रदान करनेयाळे शरीरः वाणी	निश्चय करानेवाले लक्षणींका वर्णनः
ं और मनद्वारा किये जानेवाले शुभाशुभ	मृत्युके दो भेद और यत्नसाध्य मृत्युके
कर्मीका वर्णन *** *** ५९३९ १४५-खर्ग और नरक तथा उत्तम और अधम कुलमें	चार भेदीका कथना कर्तव्यपालनपूर्वक
	शरीर-त्यागका महान् फल और काम-कोध
जन्मकी प्राप्ति करानेवाले कर्मोंका वर्णन *** ५९४३	आदिद्वारा देह-त्याग करनेसे नरककी
१. राजधर्मका वर्णन *** ५९४७	प्राप्ति *** ६००५
२. योद्धाओंके धर्मका वर्णन तथा रणयश्रमें	१४. मोक्षधर्मकी श्रेष्ठताका प्रतिपादनः मोक्ष-
प्राणोत्सर्गकी महिमा	साधक शानकी प्राप्तिका उपाय और
३. संक्षेपसे राजधर्मका वर्णन "" ५९५३	मोक्षकी प्राप्तिमें वैराग्यकी प्रधानता *** ६००८
४. अहिंसाकी और इन्द्रियक्षयमकी प्रशंसा	१५ सांख्यज्ञानका प्रतिपादन करते हुए
तथा दैवकी प्रधानता " ५९५५	अव्यक्तादि चौबीस तत्त्वींभी उत्पत्ति
५. त्रिवर्गका निरूपण तथा कल्याणकारी	आदिका वर्णन *** ६०१३
आचार-व्यवहारका वर्णन *** ५९५५	
६ विविध प्रकारके कर्मफलोंका वर्णन 😬 ५९५९	१६ योगधर्मका प्रतिपादनपूर्वक उसके फलका वर्णन *** ६०१६
७. अन्धत्व और पङ्कुत्व आदि नाना प्रकारके	१७. पाशुपत योगका वर्णन तथा शिवलिक्न-
दोषों और रोगोंके कारणभूत दुष्कर्मी- का वर्णन	पूजनका माहात्म्य °°° ६०१९
का वर्णन " ५९६४	१ड६ -पार्वतीजीके द्वारा स्त्री-धर्मका वर्णन *** ६०२१
८. उमा महेश्वर संवादमें कितने ही महत्त्वपूर्ण	१४७-वंशपरम्पराका कथन और भगवान् श्रीकृष्णके
विषयोंका विवेचन ***	माहारम्यका वर्णन *** ६०२५
प्राणियोंके चार भेदींका निरूपणा पूर्व-	१४८-भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन और
जन्मकी स्मृतिका रहस्यः मरकर फिर	भीष्मजीका युधिष्ठिरको राज्य करनेके लिये
लीटनेमें कारण स्वमुदर्शन्। दैव और पुरुषार्थ	आदेश देना *** १०३४
तथा पुनर्जन्मका विवेचन 💮 ५९७६	आदेश देना *** ६०२८ १४९-श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् *** ६०३३
१० यमलोक तथा वहाँके मार्गीका वर्णनः	१५०-जपने योग्य मन्त्र और संबेरे-शाम कीर्तन
पापियोंकी नरकयातनाओं तथा कर्मानुसार	करनेयोग्य देवता। ऋषियों और राजाओंके
विभिन्न योनियोंमें उनके जन्मका उल्लेख ५९८०	- 6
११- ग्रुभाग्रुभ मानस आदि तीन प्रकारके	मञ्जलमय नामीका कीतेन-माहात्म्य तथा गायत्री-जपका फल *** ६०५०
कमौंका स्वरूप और उनके फलका एवं	The state of the s
मद्यसेवनके दोषींका वर्णनः आहार-	11.
गुद्धिः मांस-भक्षणसे दोषः मांस न	१५२-कार्तवीर्यं अर्जुनको दत्तात्रेयजीसे चार
खानेसे छामः जीवदयाके महत्त्वः	वरदान प्राप्त होनेका एवं उनमें अभिमानकी
गुरुपूजाकी विधिः उपवास-विधिः ब्रह्मचर्य-	उत्पत्तिका वर्णन तथा ब्राह्मणौकी महिमाके
पालनः तीर्थचर्चाः सर्वसाधारण द्रव्यके	विषयमें कार्तवीर्थ अर्जुन और वायुदेवताके
दानसे पुण्यः अन्नः सुवर्णः गौ, भूमिः	संवादका उल्लेख *** *** ६०५७
कन्या और विधादानका माहात्म्यः पुण्य-	१५३—बायुदारा उदाहरणसहित ब्राह्मणोंकी महत्ताका
तम देशा काला दिये हुए दान और धर्म-	वर्णन "" ६०५९
की निप्फलताः विविध प्रकारके दानः	१५४-ब्राह्मणशिरोमणि उतय्यके प्रभावका वर्णन *** ६०६०
लौकिक-वैदिक यज्ञ तथा देवताओंकी पूजा-	१५५-ब्रह्मर्षि अगस्य और वसिष्ठके प्रभावका वर्णन ६०६२
का निरूपण	१५६-अत्रि और च्यवन ऋषिके प्रभावका वर्णन ६०६४

१५७-कपनामक दानवींके द्वारा स्वर्गलोकपर अधिकार जमा लेनेपर ब्राह्मणींका कपींको भस्म	१६४-भीष्मका ग्रुभाग्रुभ कर्मोंको ही सुख-दुःखकी प्राप्तिमें कारण बताते हुए धर्मके अनुष्ठानपर
कर देना, वायुदेव और कार्तवीर्य अर्जुनके	जीर देना
संवादका उपसंहार ६०६६	१६५-नित्य सारणीय देवताः नदीः पर्वतः ऋषि
१५८-भीष्मजीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा-	और राजाओं के नाम-कीर्तनका माहात्म्य *** ६०८८
का वर्णन · · · ६०६८	१६६-भीष्मकी अनुमति पाकर युधिष्ठिरका सपरिवार
१५९-श्रीकृष्णका प्रयुग्नको ब्राह्मणोंकी महिमा	इस्तिनापुरको प्रस्थान *** ६०९१
बताते हुए दुर्वासाके चरित्रका वर्णन करना	(भीष्मस्वर्गारोहणपर्व)
और वह सारा प्रसङ्घ युधिष्ठिरको सुनाना "" ६०७३	१६७-भीष्मके अन्त्येष्टि संस्कारकी सामग्री छेकर
१६०-श्रीकृष्णद्वारा भगवान् शङ्करके माहात्म्यका	युधिष्ठिर आदिका उनके पास जाना और
वर्णन ६०५७	भीष्मका श्रीकृष्ण आदिसे दे ह- त्यागकी अनुमति
१६१भगवान् शङ्करके भाहात्म्यका वर्णन " ६०८०	लेते हुए धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरको कर्तव्यका
१६२-धर्मके विषयमें आगम-प्रमाणकी श्रेष्ठताः धर्मा-	उपदेश देना
धर्मके फल, साधु-असाधुके लक्षण तथा	१६८-भीष्मजीका प्राणत्यामः धृतराष्ट्र आदिके द्वारा
शिधाचारका निरूपण ": ६०८१	उनका दाह-संस्कार, कौरवींका गङ्गाके जस्से
१६३-युधिष्ठिरका विद्याः बल और बुद्धिकी अपेक्षा	भीष्मको जलाञ्चलि देना, गङ्गाजीका प्रकट
भाग्यकी प्रधानता यताना और भीष्मजीद्वारा	होकर पुत्रके लिये शोक करना और श्रीकृष्ण-
उसका उत्तर ६०८६	का उन्हें समझाना *** ६०९६

वित्र-सूची

(तिरंगा)		१५-महर्षि च्यवनका मृत्याङ्कन
१-देवाधिदेव भगवान् शङ्कर	4884	१६-इन्द्रका ब्रह्माजीके साथ गौ ोंके सम्बन्धमें
२-दण्ड-मेखलाधारी भगवान् श्रीकृष्णको		प्रश्नोत्तर ••• ५६९५
शिव-पार्यतीके दर्शन	4408	१७-महर्षि वशिष्ठका राजा सौदाससे गौओंका
३-ब्रह्माजीका गौओंको बरदान	4874	माहात्म्य-कथन
४-राजा तृगका गिरगिटकी योनिसे उद्धार	५६८७	१८-भगवती लक्षीकी गौओंसे आश्रयके लिये प्रार्थना ५७१९
५-शिव-पार्वती	4684	१९-ग्रहस्य-धर्मके सम्बन्धमें श्रीकृष्णका पृथ्वीके
६-पार्वतीजी भगवान् शंकरको शरीरधारि	जी	साथ संवाद
समस्त नदियोंका परिचय दे रही हैं	६०२२	२०-बृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको उपदेश " ५८४२
७-पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु	*** 6033	२१—देवलोकमें पतित्रता शाण्डिली और सुमनाकी
(सादा)		यात-चीत
८-वृद्धा गौतमीकी आदर्श क्षमा	4838	२३-इन्द्रका भगवान् विष्णुके साथ प्रश्नोत्तर *** ५८८६
९-धर्मात्मा शुक और इन्द्रकी वात-चीत	4888	२४-भगवान् श्रीकृष्णकी तपस्या *** ५९०७
१०-महर्षि वशिष्ठका ब्रह्माजीके साथ प्रश्नोत्तर	4884	२५-भगवान् शंकर श्रीकृष्णका माहातम्य
११-भगवान् श्रीकृष्ण एवं विभिन्न महर्षियों	ы	कह रहे हैं ''' द०२५
युधिष्ठिरको उपदेश ***	*** 4479	२६-भगवान् दत्तात्रेयकी कार्तवीर्यंपर कृपा * * ६०५७
१२-भयभीत कबृतर महाराज		२७-शरश्यापर पढ़े भीष्मकी युधिष्ठिरसे वातचीत ६०९३
शिविकी गोदमें	4468	२८-श्रीकृष्ण और व्यासनीके द्वारा पुत्र-
१३-पृथ्वी और श्रीकृष्णका संवाद	4488	शोकाकुला गङ्गाजीको सान्त्वना • • • ६०९८
१४जालके साथ नदीमेंसे निकाले गये महर्षि	व्यवन ५६ ३ ३	२९-(१७ लाइन चित्र फरमोंमें)

आश्वमेधिकपर्व

ज्ञायाय:	विषय	वृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	वृष्ठ-संख्या
	(अश्वमेधपर्व)		१५-भगवान् श्रीइ	हण्णका अर्जुनसे द्वारक	ा जानेका
१-युधिह	इरका शोकमम होकर गिरना अं	ौ र	प्रस्ताव करन	7	··· 左右右右
	ष्ट्रका उन्हें समझाना ***			(अनुगीतापर्व)	
	ण और व्यासजीका युधिष्ठिरको समझा		१६-अर्जुनका अ	किल्लासे गीताका विप	य पूछना
	जीका युधिष्ठिरको अस्वमेध यज्ञके वि		और श्रीऋष	गका अर्जुनसे सिद्धः म	हिंप एवं
	ी प्राप्तिका उपाय बताते हुए संवर्त अ	to .	काश्यपका सं	वाद सुनाना	• • • ६१३३
	का प्रसङ्ग उपिथत करना		१७-काश्यपके प्र	श्नोंके उत्तरमें सिद्ध म	हात्माद्वारा
	के पूर्वजोंका परिचय देते हुए व्यासर्ज		जीवकी विवि	ध गतियोंका वर्णन	*** 6 4 5 €
द्वारा	उनके गुणः प्रभाव एवं यशका दिग्दर	ति ६१०३		-प्रवेशः आचार-धर्मः व	
५—इन्द्रव	ही प्रेरणासे बृहस्पतिजीका मनुष्यको य	परा	अनिवार्यता	तथा संसारसे तरनेके	उपायका
न कर	उनेकी प्रतिशा करना	** ६१०५	वर्णन 😁	6 d. ***	€ 5 3 8
६-नारदः	<mark>जीकी आ</mark> ज्ञासे मरुत्तका उनकी बता	यी		संवादमें मोक्ष-प्राप्तिके	
हुई र	पुक्तिके अनुसार संवर्तसे मेंट करना '	** ६१०७		4-9-6	
	और महत्तकी बातचीतः महत्तके विशे			—एक ब्राह्मणका अप	
आग्रह	रूपर संवर्तका यज्ञ करानेकी स्वीकृति दे	ना ६११०		उपदेश करना	
	का मरुत्तको सुवर्णकी प्राप्तिके वि	_		से सम्पन्न होनेवाले यर	
	वजीकी नाममयी स्तुतिका उपदेश अ			र वाणीकी श्रेष्ठताका	
	ी प्राप्ति तथा मरुत्तकी सम्पर्			ौर इन्द्रियरूप सप्त है	
	तिका चिन्तित होना			न-इन्द्रिय-संवादका वर्णन	
_	विका इन्द्रसे अपनी चिन्ताका का			न आदिका संवाद और	
	ा, इन्द्रकी आज्ञासे अग्निदेवका मरु	_		।। बत्लामा ***	
	उनका संदेश लेकर जाना और संव			अौर देवमतका स	
भयसे	पुनः लौटकर इन्द्रसे बहायलकी थे। ॥	इता	उदानके उत	क्षष्ट रूपका वर्णन	६१५५
	॥ हा गन्धवराजको भेजकर मरुत्तको ।		२५-चातुहोम य	त्रका वर्णन *** रिप्रधानता ***	६१५६
	ना और संवर्तका मन्त्र-बलसे इन्द्रस		२६-अन्तयामीक	प्रियानता ***	६१५७
				यक महान् वनका वर्ण	
करन	देवताओंको बुलाकर मरुत्तका यज्ञ ा '''		२८-ज्ञानी पुरुष	भी खिति तथा अष्वर्यु अ	ारि यतिका *** ६१६१
	ष्णका युधिष्ठिरको इन्द्रद्वास शरी		राषाद २९—परशरामजी	हे द्वारा क्षत्रिय-कुलका सं	हार *** ६१६३
	<mark>पुरका संहार करनेका इतिहास सुना</mark>			ध्यान-योगका उदाहर	
समङ्		६१२३		परशुरामजीको समझ	
	गान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको मनपर वि			का तपस्याके द्वारा हि	
	के लिये आदेश		करना	101	••• ६१६५
	ष्णाद्वारा ममताके त्यागका महत्त्व, क			रीषकी गायी हुई अ	
	का उल्लेख और युधिष्ठिरको य			यक गाथा '''	
	प्रेरणा करना '''				
	यिका अन्तर्भान होनाः भीष्म आवि			ाद ***	
	करके युधिष्ठिर आदिका हस्तिनापुरमें ज				
तथा	युधिष्ठिरके धर्म-राज्यका वर्णन	7553	का परिचय	दना ***	*** 8 808

अरेस क्षेत्रका रहण्य बतालो हुए ब्राह्मण- ग्रीताका उपरेश्वर (
सीताक उपसंदार से प्रकार वर्णन सार अर्चुलिस मोद्या पर्यक्षण वर्णन प्रकार वर्णन वर्ण		
प्रश् और शियफे तंवादमें प्रशा और महरियों के स्वारा अर्थे महरियों के स्वारा के दारा अर्थे महरिया वर्ण में अर्थ के अर्थ	आर धनकका रहस्य बतलात हुए ब्राह्मण-	
सुने और शिष्णके संवादमें ब्रह्मा और महर्षियोंके प्रश्नीत्त होरा तमोगुणको उसके कार्यका और फल्का वर्णन ''' इर्फ सुने कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कर्छ '' इर्फ सुने कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कर्ण कर्णन और प्रशासमत्त्रका जाननेका कर्णन '' इर्फ सुने कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कर्णन '' इर्फ सुने कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कर्णन '' इर्फ सुने कार्यका वर्णन कर्णन जोर उसके स्वरूपका वर्णन हर्णन सहसार अग्र प्रमासमत्त्रका जाननेकी सहिमा '' इर्फ सुने कार्यका वर्णन हर्णन सहसार अग्र प्रमासमत्त्रका जाननेकी सहिमा अग्र प्रमासमत्त्रका जाननेकी सहिमा अग्र प्रमासमत्त्रका अग्र विद्वर्गका वर्णन हर्णन अग्र विद्वर्गका वर्णन हर्णन वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश स्थलपका वर्णन हर्णन वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलप होना तथा हर्णन और अग्र विद्वर्गका वर्णन वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णन हर्णन स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णका स्थलपका वर्णन स्थलपका वर्णका स्थलप		
प्रश्नोत्तर		
ह १-अहा जिंके द्वारा तमी गुणका उसके कार्यका और फलका वर्णन ''' १९७६ वर्णका वर्णन ''ं १९७६ वर्णका वर्णन ''ं १९७६ वर्णका वर्णन कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका कल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और अहारिक नामोंका वर्णन ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका कार्यका वर्णन कल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन और प्रकारका जाननेका कल्ट ''ं १९०-स्वागुणके कार्यका वर्णन कल्ट 'हिस्स प्रकारका जाननेका कल्ट 'हिस्स प्रकारका जाननेका कल्ट कल्ट कल्ट कल्ट कल्ट कल्ट कल्ट कल्ट		कराना और मरुदेशमें जल प्राप्त होनेका
इ.स. न्याजीके द्वारा तमोगुणका उसके कार्यका और फल्का वर्णन "इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स	प्रश्नोत्तर *** ६१७३	
अरेर फल्का वर्णन १७—रजीगुण के कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल्क १९०६ १८—रजागुण के कार्यका वर्णन और उसके जाननेका का फल्क १९०८ १९—रजागुण के कार्यका वर्णन और उसके जाननेका का फल्क १९०८ १९—रजागुण के कार्यका वर्णन और उसके जाननेका का फल्क १९०८ १९—रजा आर गुण के कार्यका वर्णन और उसके जाननेका वर्णन १९०८ १९—सक्त कारि गुणों का और प्रकृतिक नामों का वर्णन १९०८ १९—अहंकारकी उत्पत्ति और उसके रवक्षण वर्णन १९८२ १९—अहंकारकी उत्पत्ति और उसके रवक्षण वर्णन १९८४ १९—अहंकारकी उत्पत्ति और उसके रवक्षण वर्णन १९८४ १९—अहंकारकी उत्पत्ति और उसके रवक्षण वर्णन १९८४ १९—अहंकारकी उत्पत्ति और उसके रवक्षण वर्णन १९८८ १९—सावार अहंगण के हिल्ल अपनेक सावार वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उत्परेश १९८८ १९—सावार प्राणि पेरें अधिपतियोंका, धर्म आदिके क्ष्मणांका कार्यः वर्णन अधि अधिपतियोंका, धर्म आदिके क्षमणांका कार्यः वर्णन अधि अधिक सावार कार्णन तथा वेरत्रका और आत्रका कार्ण १९८८ १९—सावार अहंगण के व्राणा वर्णन १९८८ १९—सावार अहंगण के व्राणा के व्राणा कार्णन १९८८ १९—सावार अहंगण के व्राणा के व्राणा कार्णन १९८८ १९—सहंकार वर्णन अधि अधिक के व्राणा कार्णन १९८८ १९—सावार अहंगण के व्राणा कार्णन वर्णन कार्णन वर्णन वर्णन कार्णन वर्णन कार्णन वर्णन वर्णन कार्णन वर्णन कार्णन वर्णन वर्णन वर्णन वर्णन वर्णन वर्णन वर्णन कार्णन वर्णन वर्		५६-उत्तङ्कती गुरुभक्तिका वर्णनः गुरुपुत्रीके
दृश्य स्वारा प्रशास वर्णन और उतक जाननेका फल "ह्रश्य स्वरास वर्णन और उतक जाननेका फल "ह्रश्य स्वरास वर्णन और उतक जाननेका फल "ह्रश्य स्वरास वर्णन और प्रमात्मत्वाको जाननेकी महिमा "ह्रश्य स्वरास वर्णन अरेर प्रमात्मत्वाको जाननेकी महिमा "ह्रश्य स्वरास वर्णन अरेर प्रमात्मत्वाको जाननेकी महिमा "ह्रश्य स्वरास प्रमात्म अरेर प्रमात्मत्वाको जाननेकी महिमा "ह्रश्य स्वरास महाभूतों और ह्रान्द्रश्योकी स्वरास अर्थभ्य और अर्थभ्य और अर्थभ्य को अर्थभ्य केर अर्थभ्य को अर्थभ्य केर कार करना वर्णन स्वरास करना "ह्रश्य स्वरास करना वर्णन स्वरास करना वर्णम स्वरास करना वर्णन स्वरास करना वर्णम स्वरास करना वर्णन स्वरास करना वर्णम सहस कर वर्णम वर्णम करना वर्णम स्वरास करना स्वरास करना वर्णम सहस वर्णम वर्णम करने वर्णम कर		
पण्ड नियान प्राप्त कार्यका वर्णन और उसके जाननेक कार कर		दिव्यकुण्डल लानेके लिये उत्तक्क्का राजा
इ.८सल्बगुणके कार्यका वर्णन और उसके जानने का फल " " हर्र प्रमुख्य कार्यका वर्णन अरे प्रमासतस्वको जाननेकी महिमा " " हर्र प्रमुख्य कार्यका अर्थ प्रमासतस्वको जाननेकी महिमा " " हर्र प्रमुख्य कार्यका अर्थ प्रमासतस्वको जाननेकी महिमा " " हर्र प्रमुख्य कार्यकार अर्थ प्रमुख्य महिमा जोर दहन्यों की अधिदेवतका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश हर्णक अर्थ प्रमास अर्थ प्रमुख्य महिमार्ग उपदेश हर्णक अर्थ प्रमास अर्थ प्रमुख्य महिमार्ग उपदेश हर्णक प्रमुख्य महिमार्गका अर्थ हर्णक प्रमुख्य महिमारा परमुख्य महिमारा प्रमुख्य महिमारा		सौदासके पास जाना *** ६२२०
स्था पर प्राणिका और प्रकृतिक नामोंका वर्णन स्थाप क्षेत्र अप प्रमात्मतत्त्वको जानोका वर्णन स्थाप अप प्रमात्मतत्त्वको जानोको स्थाप अप प्रमात्मतत्त्वको जानोको स्थाप अप प्रमात्मतत्त्वको जो स्थाप स्थाप अप प्रमात्म अप प्रमात्म जान स्थाप स्थाप अप प्रमात्म जान स्थाप स्थाप अप प्रमात्म जान स्थाप अप प्रमात्म अ		५७ जत्तकका सीटाससे जनकी रानीके कण्डल
पति वाला वर्णन ४०-महस्तर्व ने नाम और परमात्मतत्वने जाननेकी सहिमा ४१-जहंकारकी उत्पत्ति और उसके स्वरूपका वर्णन ११८४ ४१-जहंकारकी पांच का अधियतियोंका अधियतिवर्तका वर्णन तथा विश्वचिमार्गका उपरेश ४१-जहंकारकी अधियतियोंका अधियतियोंका स्वर्णन वर्णन तथा वेत्रका जिल्लाका वर्णन १९८४ ४१-जहंकारी अधियतियोंका अतुमृतिके साधनोंका का वर्णन तथा वेत्रका जीर सावकी निक्तताका वर्णन ४१-देहरूपी काल्चकका तथा यह्छ और माहाणके अर्मका कथन ४१-देहरूपी काल्चकका तथा यहछ और साहाणके अर्मका कथन ४१-देहरूपी काल्चकका तथा यहछ और माहाणके अर्मका कथन ४१-देहरूपी काल्चकका तथा यहछ और साहाणके अर्मका कथन ६१०२ ४१-साहाणोंकी अनुमतिकी च्या व्यर्गका अर्मका कथन ६१०२ ४१-वाहाणोंकी अनुमतिकी चर्णा वाल्कका विश्वच विश्वच विश्वच ६१०२ ४१-वाहाणोंकी आजा देना ६१०२ ४१-साहाणोंकी आजा देना ६१०२ ४१-साहाणोंकी आजा देना ६१०२ ४१-मावार श्रीष्टणका द्वारका देवक प्रत्रिक मुक्तिक सुक्ति वेत्रका व्यार्व मुक्तिका व्यार्व मुक्तिक सुक्तिका विश्वच क्रिक्ता व्यर्गिक पुक्तिका ६१०२ ४१-साहाणोंकी आजा भगवान्य प्रवृक्तिका वाल्वका और पराम्माव्यक्तिका विश्वच क्रिक्ता व्यर्वका ६१०२ ४१-साहाणोंकी अनुमतिको ६१०२ ६००० विश्वच व		गाँगता और सीरामके करनेमें गानी ग्रहणत्मीके
अण्डलाक अपर्यं होना तथा हेन्द्र आर्र अपिर्मा सिहमा ''' ११८ अहंकारको उत्पत्तिऔर उत्पक्ष रक्षपका वर्णन १९८५ ११८ अहंकारको उत्पत्तिऔर उत्पक्ष रक्षपका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा विवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा विवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा क्षेत्रकार्भ विल्लामा '' ११८ वर्णन तथा क्षेत्रकार्भ व्याप्तिके प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रथान करना तथा प्रहस्त और अपिर्मान्यक वर्णन '' ११८ वर्णन वर्णन प्रधान करना तथा प्रहस्त और अपिर्मान्यक वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रमात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णन और प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्		पास जाना " ६२२२
अण्डलाक अपर्यं होना तथा हेन्द्र आर्र अपिर्मा सिहमा ''' ११८ अहंकारको उत्पत्तिऔर उत्पक्ष रक्षपका वर्णन १९८५ ११८ अहंकारको उत्पत्तिऔर उत्पक्ष रक्षपका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा विवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा विवृत्तिमार्गका उपरेश ११८ वर्णन तथा क्षेत्रकार्भ विल्लामा '' ११८ वर्णन तथा क्षेत्रकार्भ व्याप्तिके प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रधानिक प्रथान करना तथा प्रहस्त और अपिर्मान्यक वर्णन '' ११८ वर्णन वर्णन प्रधान करना तथा प्रहस्त और अपिर्मान्यक वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रमात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णन और प्रसात्माके वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना विवेचन १२०० वर्णन और प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्णक प्रधान करना वर्णन '' ११८ वर्णक प्रधान करना वर्		५८—कुण्डल लेकर उत्तङ्कका लौटनाः मार्गमं उन
प्रहिमा '' ६१८३ ४१-अर्डकारकी उत्पत्ति और उसके स्वरूपका वर्णन ६१८४ ४२-अर्डकारकी उत्पत्ति और उसके स्वरूपका वर्णन ६१८४ ४२-अर्डकारके प्रख्य महाभृतों और इन्द्रियोंकी छिप्र अध्यात्म, अधिभृत और अधिदेवतका वर्णन तथा निइत्तिमार्गका उपदेश '१८८४ ४३-चराचर प्राणियोंके अधिपतियोंका, धर्म आदिक लक्षणोंका और विपयोंकी अतुभृतिके साधनोंका धर्णन तथा क्षेत्रका विलक्षणता '६१८४ ४४-सव पदायोंके आदि-अन्तका और आनकी निस्ताका वर्णन '' ६१९१ ४५-देहरूपी काल्यकका तथा ग्रहरूष और ब्राह्मणके धर्मका कथन '' ६१९१ ४५-देहरूपी काल्यकका तथा ग्रहरूष और ब्राह्मणके धर्मका कथन '' ६१९१ ४५-प्रहाचारी, वान्मम्ही अपेर मंद्राक्षित धर्मका वर्णन ६१९४ ४५-प्रहाचारी, वान्मम्ही अति धर्मका वर्णन ६१९४ ४८-प्रहाचारी, वान्मम्ही के अपेर म्याह्मके धर्मवर्गका प्रमान करना वर्णन आहे परमाहमके लिये अर्थमेषयर करनी समझाकर प्रिष्ठिरको अश्वमेषयर करनी समझाकर प्राह्मके स्थान करना ६२०० ५००० सम्मेन लियो जानने लिये अर्थमेषयर करनी समझाकर प्राह्मके लियो अर्थमेषयर करनी समझाकर प्राह्मके स्थान करना ६२०० ५००० समझाकर प्राह्मके स्थान करना ६२०० समझाकर प्राह्मके साथ करान ६२४० समझाकर प्राह्मके सम्बान करना ६२०० समझाकर अर्थितिक जानो करनी समझाकर प्राह्मके सम्बान करना ६२०० समझाकर प्राह्मके समझाकर अर्थितिक जानो करनी समझाकर प्राह्मके साथ करान करना ६२०० समझाकर प्राह्मके साथ करनी समझाकर साथ करान ६२०० समझाकर साथ करान ६२०० समझाकर साथ करान करान करान ६२०० समझाकर साथ करान करान करान करान करान करान करान करान		कुण्डलीका अपहरण होना तथा इन्द्र और
प्रश्-अहंकारकी उत्पत्ति और उसके खरूपका वर्णन ६१८४ ४२-अहंकारसे पञ्च महाभूतों और इन्द्रियोंकी स्रष्टिश अध्यातम अधिभृत और अविदेवतका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश "१८४ ४२-चरावत् प्राणियोंके अधिपतियोंका, धर्म आदिक रुशणोंका और विपयोंकी अतुमृतिके साधनों- का यर्णन तथा क्षेत्रका निव्याकों का विव्याकों का वर्णन १९९२ ४५-वहरूषी काल्चकका तथा यहस्य और ब्राह्मणं १९९२ ४५-वहरूषी काल्चकका तथा यहस्य और ब्राह्मणं १९९२ ४८-आतमा और परमात्माके खल्कपका विव्याक १९९२ ४८-आतमा और परमात्माके खल्कपका विव्याक १९९२ ५१-वास्याका प्रभावः आतमाका स्वरूप कोर उसके ज्ञानके लिये अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने करनो का व्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने करनो विव्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने सावाकों का व्याक्षणको अपने सावाको का व्याक्षणको अपने करनो विव्याक्षणको अपने सावाको का व्याक्षणको विव्याक्षणको विव्याक्षणको अपने सावाको विव्याक्षणको विव्य	इण्-महत्तातक नाम आर परमात्मतत्त्वका जाननका	
प्रश्निक्षारिक्ष पद्म महाभूतों और इन्द्रियोंकी स्रष्टित अध्यातम, अधिभृत और अधिदिवतका वर्णन तथा निहित्तमार्गका उपरेश प्रश्निक्षामांका उपरेश प्रश्निक्षामांका अधिपतियोंका, धर्म आदिक लक्षणोंका और विपयोंकी अतुभृतिक साधनीं- का वर्णन तथा विश्वतमां अत्रिक्षणता प्रश्निक्षणका और विपयोंकी अतुभृतिक साधनीं- का वर्णन तथा विश्वतमां अत्रिक्षणता प्रश्निक्षणका बर्णन वर्णा वर्णन वर्णा वर्णन तथा विश्वतम कहनते वस्तुदेवजीको नित्यताका वर्णन प्रभ्निक्षणका क्ष्मिम् अस्तिक कहनते वस्तुदेवजीको कर्मका कथन प्रभूतिक साधनींकाः देहरूषी वृक्षका तथा शान- सङ्गते उसे काटनेका वर्णन प्रभूतिक साधनींकाः देहरूषी वृक्षका तथा शान- सङ्गते उसे काटनेका वर्णन प्रभूतिक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन प्रभूतीक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन प्रभूतीक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन प्रभूतिक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्रताक स्रमान स्रमान स्रमान स्रम्य करने स्रमान करना स्रभूतिक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका व्रमान स्रम्य स्रमान स्रमान स्रम्य स्रमान स्रमान स्रमान स्रम्य स्रमान	महिमा	
पर्यत्य प्राणियों अ विषय्त और अधिदैनतका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपरेश ११८४ ११८० प्राणियों अधिपतियों का अधिपतियां का अधिपतियों का अधि		
प्रश्न तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश ११८४ ४२ — यराजर प्राणिपंकि अधिपतियंका, धर्म आदिके लक्षणोंका और विपयंकी अनुभृतिके साधनोंका वर्णान तथा क्षेत्रका विलक्षणता ११८८ ४४ — यस पदायंके आदि-अन्तका और सानकी नित्यताका वर्णान तथा क्षेत्रका विलक्षणता ११९१ ४५ — देहरूपी काल्यककता तथा ग्रहस्य और बाहाणके धर्मका कथन ११९१ ४५ — उहानपारी, बानप्रस्थी और संन्यातीके धर्मका वर्णान ११९१ ४५ — अहम्पत्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञानका सहस्य और परमात्माकी करके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञानका सहस्य और परमात्माकी स्वरूपका विवेचन १२०० ४५ — आत्मा और परमात्माकी स्वरूपका प्रमान्तेक लिये प्रमुतिके गुणीका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णान १४० — सनके महिमा तथा अनुगीताका उपरांहार १२०० परमात्माकी महिमा तथा अनुगीताका उपरांहार १२०० ५२०० वर्णे प्रमुतिके साथ हिस्तापुर जाना और वहाँ प्रसुते साथ हारकाको प्रस्थान करना १६०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी प्रस्थान करना १६०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी प्रस्थान करना १६०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना प्रमान और उपरांहार १२०० ५२०० साथ हिस्तापुर जाना और वहाँ प्रसुते साथ हारकाको प्रस्थान करना १६०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी प्रस्थान करना १६०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना प्रसुतिका उनसे जिलानेक लिये कुन्तीकी अन्ताक परां १२०० परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके लिये कुन्तीकी जननेके लिये कुन्तीकी जननेके पर्यार्थ परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके पर्यार्थ परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके लिये कुन्तीकी जननेके लिये कुन्तीकी जननेके पर्यार्थ परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके पर्यार्थ परिक्रको जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके पर्यार्थ परिक्रके जिलानेके लिये कुन्तीकी जननेके परिक्रक उत्तरिक्तीको जननेके लिये कुन्तिकी जननेके परिक्रक जनके परिक्रको परिक्रको परिक्रको परिक्रके विनारको वात करनेके परिक्रक उत्तरिक्तिको जननेके लिये कुन्तिको जननेके परिक्रको जननेके परिक्रको जनके परिक्रको जननेके परिक्रको परिक्रको विनारको वात विनारको वि		
		क्यारे विश्वास करणाव्य स्था कार
लक्षणोंका और विपयोंकी अनुभूतिके साधर्मी- का वर्णन तथा क्षेत्रकाकी विलक्षणता अप्र—सव पदार्थोंके आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन अप्र—सेंक्स पदार्थोंके आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन अप्र—देहरूपी काल्चककातथा ग्रहरूर और ब्राह्मणके धर्मका कथन अप्र—वहस्त्री काल्चककातथा ग्रहरूर और ब्राह्मणके धर्मका कथन अप्र—मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- सक्त से उसे काटनेका वर्णन अप्र—मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- सक्त से उसे काटनेका वर्णन अप्र—अहम्मका निर्णय ज्ञाननेके लिये मुक्तिमा प्रश्न १९०-सत्तव और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धमान्त्री प्रशास अष्ठताका वर्णन अप्र—तप्तरस्त्राका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपरांहार १९०-साध्राको भ्राह्मणका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपरांहार १९०-साध्राको ज्ञानको लिये मुम्तिकी प्रश्न करना अप्र वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठरकी आज्ञा ले सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रश्न करना इत्र व्यादकी प्रणाक स्वर्ण पहुचकर वहाँ पहाव डालना और रातमें उपवासपूर्वक निवास करना १९०-साध्राको ख्राह्मणका प्रभावन स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपरांहार १९०-साध्राको ज्ञानको लिये मुम्ताकी श्रीकुण्णवे सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रश्ना करना १९०२ १९०-साध्राको ज्ञानको लिये मुम्ताकी श्रीकुण्णवे प्रार्थना अर्थ व्यादकी का ह्यान्त सुनान स्वर्णके विमार करना १९०२ १९०	वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश *** ६१८४	
का धर्मन तथा क्षेत्रज्ञकी विल्क्षणता ६१८८ ४४—सव परार्थोंके आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन ६१९१ ४५—देहरूपी कालचक्रका तथा ग्रहस्थ और ब्राह्मणके धर्मका कथन ६१९२ ४६—बह्मचारी, वानमस्थी और संन्यासीके धर्मका वर्णन ६१९४ ४७—मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञानखङ्ग उसे उसे काटनेका वर्णन ६१९८ ४८—आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन १८९८ ४८—सक्ति गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन ६२०२ ५०—सक्त और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धमान्त्री प्रग्रंसा, प्रमुत्तिके गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन ६२०२ ५१—तरस्थाका प्रमाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ ५२—श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर बुधिष्ठरकी आज्ञा ले प्रार्थना जिलानेके लिये कुम्तीकी ज्ञानके सिय मुमहाकी प्रमुक्तिको प्रमुक्तिका प्रमुक्तिका प्रमुक्तिका प्रमुक्तिका प्रमुक्तिका विनाशकी बात स्वन्तर उत्तक्तिको विनाशकी बात स्वन्तर उत्तक्तिको विनाशकी बात स्वन्तर अपने प्रमुक्तिका प्रमुक्तिको प्रमुक्तिका प्रमुक्तिका प्रमुक्तिको प्रमुक्तिका प्रमुक्		
अभिमन्युवधका द्वान्त सुनाना १२३३ विश्व पर्याक्षेत्र आदि-अन्तका और शानकी नित्यताका वर्णन १४ - देहरूपी कालचकका तथा यहस्य और ब्राह्मण क्ष्मिक क्षम कथन १४९३ ४६ - ब्रह्मचारी, बानमस्थी और संन्यासीके धर्मका वर्णन ११९४ ४८ - अति कालचकका तथा यहस्य सीके धर्मका वर्णन ११९४ ४८ - आत्मा और परमात्माके त्वरूपका विवेचन ६२०० ४८ - आत्मा और परमात्माके त्वरूपका विवेचन ६२०० ४९ - धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५० - सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्सी प्रश्ना, पञ्चभूतींक गुणींका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन १४० - सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्सी प्रश्ना, पञ्चभूतींक गुणींका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन १४० - सत्त्र स्वर्धे प्रश्ना करने प्राचित्र कालचे प्रश्ना करने युधिष्ठरको उसके पार्चद आदिकी पूजा करके युधिष्ठरको उसके पार्चद आदिकी पूजा करके युधिष्ठरको उस धन्मशिक स्वर्धे प्रश्ना आत्माका स्वरूप और उसके पार्चद आदिकी पूजा करके युधिष्ठरको उस धन्मशिक स्वर्धे प्रश्ना अति उसके प्राचित्र को प्रश्ना करना १६०० परिक्षित्र को जलनेके लिये कुन्तीकी उनसे प्राचन भागना और उत्तरको प्राचन भागना और उत्तरको प्रश्ना करना १६०० परिक्षित्र को जलनेके लिये कुन्तीकी उनसे प्राचन भागना भागना अति उत्तरको भागना भा	लक्षणींका और विपयोंकी अनुभूतिके साधनीं-	
प्रभ-सव पदायों के आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन "" इर्श्य प्रभ-देहरूपी कालचकका तथा ग्रह्स और ब्राह्मणके धर्मका कथन "" इर्श्य प्रभ-देहरूपी कालचकका तथा ग्रह्स और ब्राह्मणके धर्मका कथन "" इर्श्य प्रभ-व्याती आत्मान्या और संन्याती के धर्मका वर्णन ६र्श्य प्रभ-व्याती आतमान्या वर्षका तथा ज्ञानको समझाकर युधिष्ठिरको अश्वमेधयण करने त्राह्मणें से साथ परामर्थ अर्जुनको समझाकर युधिष्ठरको अश्वमेधयण करने त्राह्मणें से साथ परामर्थ अर्जुनको समझाकर युधिष्ठरको अश्वमेधयण करने त्राह्मणें से साथ परामर्थ अर्जुनको समझाकर युधिष्ठरको अश्वमेधयण करने त्राह्मणें से साथ परामर्थ करने साथ के अने के आने के लिये प्रभान करने त्राह्मणें के साथ परामर्थ करने साथ के अने के आने के लिये प्रभान करने त्राह्मणें से प्रभान करने त्राह्मणें अर्थन प्रभाव अर्थन त्राह्मणें प्रभाव करने व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उनके प्रमाव व्याह्मणें प्रभाव करने व्याह्मणें आगमन और उत्तर के प्रमाव करने त्राह्मणें अर्थन व्याह्मणें ज्ञानके लिये कुन्ती की उनके प्रमाव व्याह्मणें ज्ञानके लिये कुन्ती की उनके प्रमाव करने व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें के साथ होत्या करने व्याह्मणें ज्ञानके लिये कुन्ती की उनके प्रमाव करने व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें अर्थन व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें अर्थन प्रमाव और उत्तर के प्रमाव व्याह्मणें अर्थन प्रमाव अर्यन प्रमाव अर्यव अर्थन प्रमाव अर्यव अर्यव अर्थन प्रमाव अर्	का वर्णन तथा क्षेत्रज्ञकी विलक्षणता *** ६१८८	६१-आकृष्णका सुभद्राक कहनस वसुदवजाका
नित्यताका वर्णन ** ** ** ** ** ** ** ** **		आभमन्युवधका चृत्तान्त सुनाना १९२२
भूष- नेहरूपी कालचकका तथा ग्रहस्थ और ब्राह्मणंक धर्मका कथन भूष- वहरूपी कालचकका तथा ग्रहस्थ और ब्राह्मणंक धर्मका कथन भूष- वहरूपी कालचकका तथा ग्रहस्थ और ब्राह्मणंक धर्मका कथन भूष- वहरूपी कालचकका तथा ग्रहस्थ और ब्राह्मणंक ६१९४ भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे उसे काटनेका वर्णन भूष- व्यक्तिक धाधनोंका देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- खङ्गसे असे प्रमालमंक विकेचन ६२०० भूष- व्यक्तिक धाधनोंक धाय व्यक्तिक प्रमालमंक विकेचन ६२०० भूष- व्यक्तिक धाधनोंक धाय व्यक्तिक प्रमालमंक विकेचन ६२०० भूष- व्यक्तिक धाय व्यक्तिक प्रमालमंक उसे व्यक्तिक विचारक विकेचन ६२०० भूष- व्यक्तिक धाय व्यक्तिक प्रमालमंक उसे आरा विक्रमक विचारक विच		
प्रमंत्रा कथन ४६ - ब्रह्मचारी, बानप्रस्थी और संन्यासीके धर्मका वर्णन ६१९४ ४७ - मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञानस्व से उसे काटनेका वर्णन ४८ - आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन ६२०० ४८ - आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन ६२०० ४८ - आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन ६२०० ४९ - धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५० - सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्त्वी प्रशंसा, पञ्चम्तोंक गुणोंका विस्तार और परमात्माकी अष्टताका वर्णन ४१ - तपस्थाका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ ५१ - तपस्थाका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ ५१ - अग्रिक्षणका अर्जुनके साथ हिस्तानापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठरकी आज्ञा ले मुन्न बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ३१ - अग्रिक्षणका अर्जुनके साथ हिस्तानापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठरकी आज्ञा ले मुन्न बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ५२ - अग्रिक्षणका अर्जुनके साथ हिस्तानापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठरकी आज्ञा ले मुन्न बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ५२ - अग्रिक्षणका अर्जुनके लिये कुन्तीकी अग्रमान और उत्तरको मुन्न बाय द्वारकाको प्रस्थान करना ६२ - अग्रिक्ष आज्ञा देना ६५ - आग्रिक्ष अग्रम अग्रम अग्रम अग्रम अग्रस उत्तरको मुन्न बारकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ५२ - अग्रिक्षणको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ५२ - अग्रिक्षणका अर्जुनके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ३२ - अग्रिक्षणको अग्रम		
प्रस-न्नहाचारी, बानप्रश्वी और संन्यासीके धर्मका वर्णन ६१९४ ४७-मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञानखड़ खड़से उसे काटनेका वर्णन ४६-आत्मा और परमात्माके खरूपका विवेचन ६२०० ४६-आत्मा और परमात्माके खरूपका विवेचन ६२०० ५०-सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्की प्रश्नं प्रवेश प्रश्नं प्रश्नं प्रश्नं प्रवेश जीवत करनेके	धर्मका कथन	अर्जुनको समझाकर युधिष्ठिरको अश्वमेधयश
४७—मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान- सद्धि उसे काटनेका वर्णन ४८—आत्मा और परमात्माके खरूपका विवेचन ६२०० ४९—धर्मका निर्णय जाननेके छिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५०—सत्त्व और पुरुषकी मिन्नता, बुद्धिमान्दर्भी प्रगंसा, पञ्चभूतोंके गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन ४१—तपस्थाका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ५२-श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिछकर युधिष्ठिरकी आज्ञा छे सुभद्राके साथ दारकाको प्रस्थान करना ५२०२ ६६-श्रीकृष्णका इस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके प्रवंद आदिकी पूजा करके युधिष्ठिरका उस धनराशिको खुदवाकर अपने साथ छे जाना ६२४२ ६६-श्रीकृष्णका इस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके प्रतं वालकको जिलानेके छिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ५२४३ ६८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकारहमें प्रवेश, उत्तराका पर्यना ६२४२ ६८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकारहमें प्रवेश, उत्तराका विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		करनेकी आशा देना ***
खड़से उसे काटनेका वर्णन ४८—आतमा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन ६२०० ४९—धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५०—सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता बुद्धिमान्की प्रशंसा प्रश्न प्रभन प्रश्न प्रभन प्र		६३-युधिष्ठिरका अपने भाइयोंके साथ परामर्श
४८—आत्मा और परमात्माके खरूपका विवेचन ६२०० ४९—धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५०—सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्की प्रशंसा, पञ्चभूतोंक गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन		करके सबको साथ ले धन ले आनेके लिये
४९-धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१ ५०-सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता , बुद्धिमान्की प्रशंसा , पञ्चभूतोंके गुणोंका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन		प्रस्थान करना " ६२३७
५० - सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता बुद्धिमान्की प्रशंसा पद्मात्माकी प्रश्ने गुणोंका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन '' ६२०२ पर्शाक्षा प्रभाव आत्माका स्वरूप और उसके शानकी महिमा तथा अनुगीताका उपरंहार ६२०६ मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्राथमा अर्थान करना '' ६२०२ प्राथमा अर्थान करना '' ६२०२ प्रार्थमा अर्थान करना '' ६२०२ प्रार्थमा अर्थन स्वरूप के विनाशकी बात सुनकर उत्तक्कप्रमित्नाश्चरी विनाशकी बात सुनकर उत्तक्कप्रमित्नाश्चरी व्रविकायहर्मे प्रवेश उत्तराका विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		६४-पाण्डचाका हिमालयपर पहुचकर वहा पहाव
पञ्चभूतीक गुणींका विस्तार और परमात्माकी अष्ठताका वर्णन ' द्रु र पन्पादाकी खुदवाकर अपने साथ छे जाना' ६२४१ ५१—तपस्थाका प्रभावः आत्माका स्वरूप और उसके जानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रथार वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा छे सुभद्राके साथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा छे सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना ' ६२०९ प्रार्थना ' ६२४२ प्रथमी अक्टिणसे कौरवोंके विनाशकी बात सुनकर उत्तक्कपुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		
श्रेष्ठताका वर्णन ''' ११-तपस्याका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार १२०६ ६६-श्रीकृष्णका हितानापुरमें आगमन और उत्तराके मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना १२०९ प्रम्पीक्ष ज्ञानको ज्ञानको ज्ञानको लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना इ०-परीक्षित्को जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे प्रभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना १२०९ प्रार्थना १८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकायहमें प्रवेश, उत्तराका सुनकर उत्तक्षमुनिका कुपित होना और विलाप और अपने प्रतको जीवित करनेके		
५१-तपस्थाका प्रभावः आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उत्तर वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४६ प्रभ्यान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४६ प्रभ्यान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४६ प्रभ्यान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४५ ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात सुनकर उत्तक्कपुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		
शानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६ ५२-श्रीकृष्णका अर्जुनके षाथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आशा ले सुभद्राके षाथ द्वारकाको प्रस्थान करना " ६२०९ ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात सुनकर उत्तक्कपुनिका कुपित होना और		
५२-श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ इस्तिनापुर जाना अपेर वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले ६७-परीक्षित्को जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४५ ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात ६८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकाग्रहमें प्रवेशः उत्तराका सुनकर उत्तङ्कसुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		६६-श्रीकृष्णका इस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके
और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले ६७-परीक्षित्को जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना '' ६२०९ प्रार्थना '' ६२४५ ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात ६८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकायहमें प्रवेशः उत्तराका सुनकर उत्तद्वसुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके	शानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६	मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी
और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले ६७-परीक्षित्को जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना '' ६२०९ प्रार्थना '' ६२४५ ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात ६८-श्रीकृष्णका प्रस्तिकायहमें प्रवेशः उत्तराका सुनकर उत्तद्धमुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके	५२-श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ इस्तिनापुर जाना	
सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना " ६२०९ प्रार्थना " ६२४५ ५३—मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात ६८—श्रीकृष्णका प्रस्तिकायहमें प्रवेशः उत्तराका सुनकर उत्तद्वसुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके	और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले	
५३—मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात ६८—श्रीकृष्णका प्रयुतिकायहमें प्रवेशः उत्तराका सुनकर उत्तङ्कमुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके	सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना *** ६२०९	प्रार्थना
मुनकर उत्तङ्कमुनिका कुपित होना और विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके		
		_

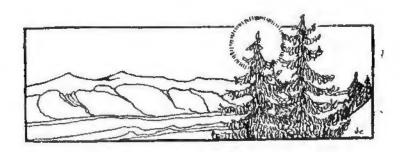
६९-उत्तराका विलाप और भगवान् श्रीकृष्णका	८७-अर्जुनके विषयमें श्रीकृष्य और युधिष्ठिरकी
🥬 उसके मृत बालकको जीवन-दान देना 😁 ६२४८	बातचीतः अर्जुनका इस्तिनापुरमें जाना तथा
७०-श्रीकृष्णद्वारा राजा परीक्षित्का नामकरण तथा	उल्पी और चित्राङ्गदाके साथ वस्रवाहनका
पाण्डबोंका हस्तिनापुरके समीप आगमन *** ६२४९	आगमन *** ६२८५
७१-अगवान् श्रीकृष्ण और उनके साथियोंद्वारा	८८-उद्पी और चित्राङ्गदाके सहित वभुवाहनका
पाण्डवींका स्वागतः पाण्डवींका नगरमें आकर	रत्न-आभूषण आदिसे सत्कार तथा अश्वमेध-
	यज्ञका आरम्भ *** :: ६२८७
सबसे मिलना और व्यासजी तथा श्रीकृष्णका	८९-युधिष्ठिरका ब्राह्मणींको दक्षिणा देना और
युधिष्ठिरको यज्ञके लिये आज्ञा देना " ६२५१	राजाओंको भेंट देकर विदा करना "" ६२९०
७२-व्यासजीकी आज्ञाने अश्वकी रक्षाके लिये अर्जुन-	९०-युधिष्ठिरके यशमें एक नेवलेका उञ्छन्नतिधारी
कीं, राज्य और नगरकी रक्षाके लिये भीमसेन	ब्राह्मणके द्वारा किये गये सेरभर सत्त्वानकी
और नकुलकी तथा कुटुम्य-पालनके लिये	महिमा उस अश्वमेधयज्ञसे भी बद्कर वतलाना ६२९३
ः सहदेवकी नियुक्तिः " ६२५२	९१-हिंसामिश्रित यज्ञ और धर्मकी निन्दा *** ६३०१
७३-सेनासहित अर्जुनके द्वारा अश्वका अनुसरण'' ६२५४	९२-महर्षि अगस्त्यके यज्ञकी कथा *** ६३०३
७४-अर्जुनके द्वारा निगतौंकी पराजय " ६२५६	(वैष्णवधर्मपर्व)
७५-अर्जुनका प्राग्ज्यौतिषपुरके राजा वज्रदत्तके	१. युधिष्ठिरका वैध्णवधर्मविषयक प्रदन और
साथ युद्ध ''' ६२५८	भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा धर्मका तथा
७६-अर्जुनके द्वारा वज्रदत्तकी पराजय *** ६२६०	अपनी महिमाका वर्णन *** ६३०७
्ष्ण-अर्जुनका सैन्धवींके साथ युद्ध " ६२६२	२. चारों वर्णोंके कर्म और उनके फलोंका वर्णन
्ष्ट-अर्जुनका सैन्धवेंकि साथ युद्ध और दुःशला-	तथा धर्मकी वृद्धि और पापके क्षय होनेका उपाय ६३१०
के अनुरोधसे उसकी समाप्ति "' ६२६४	३. व्यर्थ जन्मः दान और जीवनका वर्णनः
७९-अर्जुन और बधुवाहनका युद्ध एवं अर्जुन-	सास्विक दानोंका लक्षणः दानका योग्य पत्र
की मृत्यु ''' ६२६७	और ब्राह्मणकी महिमा ***
ंद्र १ - चित्रां द्वराका विलापः मूर्च्छासे जगनेपर	४. बीज और योनिकी शुद्धि तथा गायत्री-अपकी
बभुवाहनका शोकोद्रार और उल्पीके प्रयतन-	और ब्राह्मणींकी महिमाका और उनके
े संजीवनीमणिके द्वारा अर्जुनका पुनः	तिरस्कारके भयानक फलका वर्णन *** ६३१८
जीवित होना	५. यमलोकके मार्गका कष्ट और उससे वचनेके
८१-उद्योका अर्जुनके पूछनेपर अपने आगमन-	उपाय *** ** ६३२१
का कारण एवं अर्जुनकी पराजयका रहस्य	६ - जल-दान अन्नदान और अतिथि-सत्कारका
बताना, पुत्र और पत्नीसे विदा लेकर पार्थ-	माहात्म्य ••• ६३२६
का पुनः अश्वके पीछे जाना *** ६२७४	७. भूमिदान, तिलदान और उत्तम ब्राह्मणकी
८२-मगधराज मेघसन्धिकी पराजय " ६२७६	महिमा *** ६३३०
८३-दक्षिण और पश्चिम समुद्रके तटवर्ती देशोंमें	८. अनेक प्रकारके दानोंकी महिमा " ६३३४
होते हुए अश्वका द्वारका पञ्चनद एवं	९. पञ्चमहायज्ञा विधिवत् स्नान और उसके
गान्धार देशमें प्रवेश ६२७८	अङ्ग-भृत कर्मः भगवान्के प्रिय पुष्प तथा
८४-शकुनिपुत्रकी पराजय *** ६२८०	भगवद्भक्तींका वर्णन *** ६३३७
८५-यशभूमिकी तैयारीः नाना देशोंसे आये	१०. कपिला गौका तथा उसके दानका माहात्म्य
हुए राजाओंका यज्ञकी सजावट और आयोजन देखना *** *** ६२८१	और कपिला गीके दस भेद
अवाजन दलना ८६-राजा युधिष्ठिरका भीमसेनको राजाओंकी	११. कपिला गौमें देवताओं के निवासस्थानका तथा
पूजा करनेका आदेश और श्रीकृष्णका	उसके माहात्म्यकाः अयोग्य ब्राह्मणकाः नर्कमें
युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना ''' ६२८४	ले जानेवाले पापींका तथा स्वर्गमें ले जानेवाले पुण्योंका वर्णन *** *** ६३४७
विध्यावरंत नावना मन्द्रा महना ५५८३	पुर्ण्योका वर्णन *** ६३४७

१२. ब्रह्मह्त्याके समान पापका,अन्नदानकी प्रशंसा-	
काः जिनका अन्न वर्जनीय है। उन पापियोंकाः	
दानके फलका और धर्मकी प्रशंसाका वर्णन	६३५१
१३. भर्म और शौचके लक्षणः संन्यासी और	
अतिथिके सत्कारके उपदेशः शिष्टाचारः	
दानपात्र ब्राह्मण तथा अन्तदानकी प्रशंसा **	६३५३
१४- भोजनकी विधिः गौओंको घास डालनेका	
विधान औरतिलका माहातम्य तथा ब्राह्मणके	
लिये तिल और गन्ना पेरनेका निषेध ***	६३५६
१५. आपद्धर्म, श्रेष्ठ और निन्च ब्राह्मण, श्राद्धका	
उत्तम काल और मानव-धर्म-सारका वर्णन 🗥	६३५८
१६. अग्निके स्वरूपमें अग्निहोत्रकी विधि तथा	
उसके माहातम्यका वर्णन	६३६२

१७. चान्द्रायणवतकी विधिः प्रायश्चित्तरूपर्मे	
उसके करनेका विधान तथा महिमाका वर्णन ६३६	4
१८. सर्वहितकारी धर्मका वर्णनः द्वादशीवतका	
माहातम्य तथा युधिष्ठिरके द्वारा भगवान्की	
स्त्रति	3
१९. विषुवयोग और ग्रहण आदिमें दानकी महिमाः	
पीपलका महत्त्व, तीर्थभूत गुणोकी प्रशंसा और	
उत्तम प्रायश्चित *** ६३५	9
२०. उत्तम और अधम बाहाणींके लक्षणः भक्तः	
गौ और पीपलकी महिमा 💛 📢	96
२१. भगवान्के उपदेशका उपसंहार और द्वारका-	
गमन	19

चित्र-सूची

(तिरंगा)		८-महारानी मदयन्तीका उत्तङ्कको		
		कुण्डल-दान		\$779
१-अर्जुनका भगवान् श्रीकृष्णके साथ प्रश्नोत्तर	€638	९-उत्तङ्कका गुरुपत्नीको कुण्डल-अर्पण १०-भगवान् श्रीकृष्ण अपने पिता-माता आदिके		६२२ ९
२-भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा उत्तराके मृत बालकको जिलानेकी प्रतिश	… ६२२५	महाभारतका वृत्तान्त सुना रहे हैं ११-अश्वमेधयशके लिये छोड़े हुए		६२३१
३-सर्वदेवमयी गी-माता	£ \$8C	घोड़ेका अर्जुनके द्वारा अनुगमन	***	६२५५
(सादा)		१२-अर्जुन अपने पुत्र बम्रुवाहनको		
४-महाराज मरुत्तकी देवर्षिसे भेंट	*** 6404	छातीं लगा रहे हैं		€ 208
५-महाराज महत्तका संवर्त मुनिसे संवाद	8808	१३-महाराज युधिष्ठिरके अश्वमेधयक्रमें		
६-ब्रह्माजीका ऋषियोंको उपदेश	६२०२	एक नेवलेका आगमन		\$253
७-उत्तङ्क मुनिकी श्रीकृणासे विश्व-		१४-महर्षि अगस्त्यकी यज्ञके समय प्रतिज्ञा	***	₹₹0¥
रूप दिखानेके लिये प्रार्थना	8580	१५-(२० लाइन चित्र फरमोंमें)		



आश्रमवासिकपर्व

मध्यस्यं विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विभय	q	ष्ठ-संस्था	
(आश्रमवास्तपर्य) १—भाइयोंसहित युधिष्ठिर तथा कुन्ती आदि देवियों के द्वारा भृतराष्ट्र और गान्धारीकी सेवा २—पाण्डवोंका भृतराष्ट्र और गान्धारीके अनुकृत कर्ताव ३—राजा भृतराष्ट्रका गान्धारीके साथ बनमें जानेवे छिये उद्योग एवं युधिष्ठिरसे अनुमति देनेवे छिये अनुरोध तथा युधिष्ठिर और कुन्त आदिका दुखी होना ४—श्वासजीके समझानेसे युधिष्ठिरका भृतराष्ट्रके वनमें जानेके छिये अनुमति देना ५—भृतराष्ट्रको द्वारा युधिष्ठिरको राजनीतिका उपदेश ६—भृतराष्ट्रद्वारा राजनीतिका उपदेश) आदि देवियाँ- सेवा					
 ७—युभिष्ठिरको धृतराष्ट्रके द्वारा राजनीतिका उपदेश ८—धृतराष्ट्रका कुरुजाङ्गल देशकी प्रजात थनमें जानेके लिये आका माँगना 	t	१९९ कुरुक्षेत्रमें पहुँचना ''' २४-पाण्डवीं तथा परवासियोंका कन्तीः ग		तीः गान्धारी		
९-प्रजाजनींसे धृतराष्ट्रकी क्षमा-प्रार्थना १०-प्रजाकी ओरसे साम्बनामक ब्राह्मणक	° ६४०३ 1	२५-संजयका ऋषि	न ५२।न करना योंसे पाण्डवीं: उनक रोंका परिचय देना	ी पत्नियों तथा		
श्वतराष्ट्रको सान्त्वनापूर्ण उत्तर देना ११-भृतराष्ट्रका विदुरके द्वारा युधिष्ठिरसे श्राद्धवे छिये धन माँगनाः अर्जुनकी सहमति और भीमसेनका विरोध	t * 6 406	विदुरजीका यु २७-युधिष्ठिर आदि कलश आदि	र युधिष्ठिरकी बा धिष्ठिरके शरीरमें प्र रका ऋषियोंके आ वाँटना और धृ	वेदा श्रम देखनाः तराष्ट्रके पास	६४३२	
१२-अर्जुनका भीमको समझाना और युधिष्ठिरक धृतराष्ट्रको यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति प्रदान करना १३-विदुरका धृतराष्ट्रको युधिष्ठिरका उदारतापूण उत्तर सुनाना	} · €४१० ĥ	ऋषियोंसहित २८-महर्षि व्यासक विदुर और यु	तः उन सबके प्रमहर्षि व्यासका अ प्रदराष्ट्रसे कुशब् प्रिविष्ठरकी धर्मरूपता उनसे अभीष्ट वस्तु	गयमन पृ्छते हुए का प्रतिपादन	६४३५	
१४-राजा भृतराष्ट्रके द्वारा मृत व्यक्तियोंके लिं श्राद्ध एवं विशाल दान-यहका अनुष्ठान '' १५-शान्धारीसहित भृतराष्ट्रका वनको प्रस्थान '' १६-भृतराष्ट्रका पुरवासियोंको लौटाना और पाण्डवीन	. #865 . #865	कहना · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	(पुत्रदर्शनपर्व त यान्धवींके शोकरे) ते दुखी होना	६४३७	
अनुरोध करनेपर भी कुन्तीका वनमें जाने न रकना "" १७-कुन्तीका पाण्डवोंको उनके अनुरोधका उत्त	वे ' ६४१५ र ६४१७	मरे हुए पुत्रों ३०-कुन्तीका कर्ण	। और कुन्तीका व्य कि दर्शन करनेका के जन्मकागुप्त रहस् उन्हें सान्त्वमा देना	अनुरोध *** य बताना और		
१८-पाण्डवींका श्रियोंसहित निराश छोटनाः कुन्ती सहित गान्धारी और धृतराष्ट्र आदिका मार्गी गञ्जा-तटपर निश्चस करना			रा धृतराष्ट्र आदि उनके कहनेसे जाना		68 88	

३२-व्यासजाक प्रभावस कुरुक्षत्रक युद्धम मार गय	
कौरव-पाण्डववीरोंका गङ्गाजीके जलसे प्रकट	
होना ***	६४४५
३३-परलोकसे आये हुए व्यक्तियोंका परस्पर सग-	
द्वेषसे रहित होकर भिलना और रात बीतनेपर	
अदृश्य हो जाना, न्यासजीकी आज्ञासे विधवा	
क्षत्राणियोंका गङ्गाजीमें गोता लगाकर अपने-	
अपने पतिके छोकको प्राप्त करना तथा इस पर्वके	
अवणकी महिमा	६४४७
३४-मरे हुए पुरुषोंका अपने पूर्व शरीरसे ही यहाँ	
पुनः दर्शन देना कैसे सम्भव है ! जनमेजयकी	
इस शङ्काका वैशम्पायनद्वारा समाधान ""	६४४९
३५-व्यासजीकी कृपासे जनमेजयको अपने पिताका	
दर्शन प्राप्त होना *** ***	5848

३६ -व्यासजीकी आज्ञासे धृतराष्ट्र आदिका पाण्डवीको विदा करना और पाण्डवीका सदस्वल इस्तिनापुरमें आना

(नारदागमनपर्व)

३७-नारदजीसे धृतराष्ट्र आदिके दावानलमें दग्ध हो जानेका हाल जानकर युधिष्ठिर आदिका शोक *** ६४५६

३८-नारदजीके सम्मुख युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदिके लौकिक अभिमें दग्ध हो जानेका वर्णन करते हुए विलाप और अन्य पाण्डवोंका भी रोदन '** (४५९

३९-राजा युधिष्ठिरद्वारा धृतराष्ट्रः गान्धारी और कुन्ती-इन तीनोंकी हिश्चरोंको गङ्गार्थे प्रवाहित कराना तथा श्रादकर्म करना

चित्र-सूची

(सादा)

१-विदुरका स्क्ष्मशारीरसे युधिष्ठिरमें प्रवेश २-व्यासजीके द्वारा कौरव-पाण्डवपक्षके मरे हुए सम्बन्धियोंका सेनामहित परलोकसे आवाहन ३-(९ छाइन चित्र फरमोंमें)

48.64

.. 6886



मीसलपर्व

विश्वय पृत्त-संख्या श्रम् । स विषय पृष्ठ-संख्या भाषमान १-युधिष्ठिरका अपशकुन देखनाः यादवीके ५-अर्जुनका द्वारकामें आना और द्वारका तथा विनाशका समाचार सुननाः द्वारकार्मे ऋषियों-श्रीकृष्ण-पत्रियोंकी दशा देखकर दुखी होना ६४७४ के शापवश साम्बके पेटसे मूसलकी उत्पत्ति तथा ६-दारकार्मे अर्जुन और वसुदेवजीकी वातचीत ६४७५ मदिराके निषेधकी कठोर आशा ७-वसुदेवजी तथा मौनल युद्धमें मरे हुए यादवींका २-द्वारकार्मे भयंकर उत्पात देखकर भगवान् अन्त्येष्टि-संस्कार करके अर्जुनका द्वारकावासी श्रीकृष्णका यदुवंशियोंको तीर्थयात्राके लिये स्त्री-पुरुषोंको अपने साथ छे जानाः समुद्रका द्वारकाको हुवो देना और मार्गमें अर्जुनपर ३-कृतवर्मा आदि समस्त यादवीका परस्पर संद्वार ६४६७ हाकुओंका आक्रमणः अवशिष्ट यादवीको ४-दारुकका अर्जुनको सूचना देनेके लिये अपनी राजधानीमें बसा देना इस्तिनापुर जानाः बभुका देहावसान एवं बलराम और श्रीकृष्णका परमधाम-गमन ८-अर्जुन और ब्यासजीकी बातचीत ... £800 चित्र-सूची *** (तिरंगा) ६४७२ १-बळरामजीका परमधाम-गमन २-साम्बके पेटसे यदु वंश-विनाशके लिये मूसल पैदा होनेका ऋषियोद्वारा शाप ... ··· (मादा) ६४**६३** ··· (») EXGE ३-वसुदेवजी अर्जुनको यादव-विनाशका कृतान्त और श्रीकृष्णका संदेश सुना रहे हैं ४--(६ लाइन चित्र फरमोंमें) महाप्रस्थानिकपर्व ३-युभिष्ठिरका इन्द्र और भर्म आदिके साथ १-वृष्णिवंशियोंका श्राद्ध करके प्रजाजनीकी अनुमति ले द्रौपदीसहित पाण्डवीका महाप्रसान १४८५ २-मार्गमें द्रौपदीः सहदेवः नकुलः अर्जुन और वार्तालापः युभिष्ठिरका अपने धर्मेमें दृद् रह्नना भीमसेनका गिरना तथा युधिष्ठिरद्वारा प्रस्थेकके ^{**} ६४८८ तथा सदेह स्वर्गमें जाना ... 4x40 गिरनेका कारण बताया जाना चित्र-सूची १—अग्निकी प्रेरणासे अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकसको जलमें डाल रहे हैं (सादा) २-(२ लाइन चित्र फरमॉमें) ४-युधिष्ठिरका दिव्यलोकमें १-स्वर्गमें नारद और युधिष्ठिरकी बातचीत'' ६४९३ श्रीकृष्णः अर्जुन २-देवदूतका युधिष्ठिरको नरकका दर्शन कराना आदिका दर्शन करना ''' ५-भीष्म आदि वीरोंका अपने-अपने मूलस्वरूपमें तथा भाइयोका करुणक्रन्दन सुनकर उनका वहीं रहनेका निश्चय करना ... ६४९५ मिलना और महाभारतका उपसंहार तथा २-इन्द्र और धर्मका युधिष्ठिरको सान्त्वना देना माहातम्य तथा युधिष्ठिरका शरीर त्यागकर दिव्य १-महाभारत अवणविधिः लोकको जाना ... Ex 44 २-महाभारत-माहात्म्य ... 8480 १-युघिष्ठिरका अपने आश्रित कुत्तेके लिये त्याग *** (तिरंगा) ६४९३ २-देवदूतका युधिष्ठिरको मायामय नरकका दर्शन कराना · · · (सादा) ६४९७

३-(१ लाइन चित्र फरमेमें)